3 कुण्डलियाँ



गिरिधर

(जन्म : सन् 1714 ई. निधन : सन् 18वीं शताब्दी)

सुविख्यात कवि गिरिधर राय के जीवन के संबंध में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये अपने समय के अत्यंत लोकप्रिय कवि थे । इनके द्वारा रचित पाँच-सौ से अधिक कुण्डलियाँ 'गिरिधर' कविराय ग्रंथावली में संकलित हैं । इनकी कुण्डलियाँ नीति विषयक हैं । कवि के व्यापक जीवन-अनुभवों का संचित अमृत इनकी रचनाओं में जीवन-संदेश बनकर प्रकट हुआ है । कवि की भाषा-शैली सरल एवं सहज होते हुए भी नीति जैसे विषयों को समझाने में सक्षम है ।

प्रथम कुण्डली में कवि ने छोटे के महत्त्व को कम नहीं आँकने के लिए कहा क्योंकि कुल्हाड़ी छोटी होते हुए भी बड़े से बड़े विशालकाय वृक्ष को गिरा देती है । दूसरी कुण्डली में कवि ने बीती हुई घटना को भूल जाने में ही भलाई माना है । तीसरी कुण्डली में उन्होंने कार्य सम्पन्न होने तक अपने मन को एकाग्र चित्त रखने को कहा है इससे कार्य पूरा भी हो जाता है और लोगों को हँसने का मौका भी नहीं मिलता ।

(1)

सांई ये न विरोधिए, छोट बड़े सब भाय ।
ऐसे भारी वृक्ष को, कुल्हरी देत गिराय ।।
कुल्हरी देत गिराय, मारि के जर्मी गिराई ।
टूक-टूक कै काटि, समुद्र में देत बहाई ।।
कह 'गिरिधर कविराय', फूट जेहि के घर आई ।
हिरणाकश्यप, कंस, गए बलि, रावण सांई ।

(2)

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेई ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देई ।।
ताही में चित्त देई, बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसे न कोई, चित्त में खता न पावै ।।
कह गिरिधर कविराय, यहै करू मन परतीती ।
आगे को सुख समुझि, हो, बीती सो बीती ।।

(3)

साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोई ।
तब लग मन में राखिए, जब लग कारज होई ।।
जब लग कारज होई, भूलि कबहूँ नहिं कहिए ।
दुरजन हँसे न कोइ, आप सियरे ह्वै रहिए ।।
कह गिरिधर कवि राय बात चतुरना की ताई ।
करतूती कहीं देत आप कहिए नहीं साँई ।।

शब्दार्थ - टिप्पणी

कुंडलियाँ एक छंद-विशेष, जिसमें पहली दो पंक्तियाँ दोहे की और अंतिम चार पंक्तियाँ रोला की होती हैं । दोहे के अंतिम चरण को रोला छंद के प्रथम चरण के रूप में दोहराया जाता है और पहला शब्द ही छंद का अंतिम शब्द होता है। **विरोधिए** विपरीत भाव **कुल्हरी** कुल्हाड़ी **खता** कसूर **करूमन** कर्म, करनी **परतीती** प्रतीति **सियरे** शांत **चतुरन की ताई** समझदारों के लिए **करतूती** कर्म गुण